

नातिशये (beide Ausgg. °शिष्ये) रणे कार्त्तिकेन्द्रम् HARIV. 7498. तं बु-
वत्तम् — नैवातिशयितुं शक्नो बृहस्पतिरपि बुवन् R. 5,90,23. °शयान SÂH.
D. 133, 10. गत्या चातिशयन्याति मनोवायुवगाधिपान् R. 6, 82, 92. °श-
यमान pass. P. 5, 3, 55, VÂrtt. 6. °शयित in act. Bed. mit acc. P. 3, 4,
72, Schol. Bûg. P. 5, 24, 10. ohne acc. ungewöhnlich, bedeutend, ausser-
ordentlich: वर्षानां संनिधिः P. 1, 4, 109, Schol. °त्वं n. Comm. zu Spr.
(II) 1683. mit pass. Bed.: °शयितो गुरुर्भवा P. 3, 4, 72, Schol. पुत्रेण
नातिशयितो यः प्रज्ञादानविक्रमैः MÂRR. P. 21, 99. 113, 28. 116, 7. impers.:
अतिशयितं भवता P. 3, 4, 72, Schol. अनतिशयनीय unübertrefflich KIR.
5, 52. — Vgl. अतिशय figg. — caus. übertreffen: °शयित mit pass. Bed.
MÂRR. P. 130, 10. Vgl. अतिशयान.

— व्यति hinausreichen über, überbieten: सर्वतो धातुव्यं व्यतिशये
KÂTH. 34, 7.

— अग्रि ruhen in, auf, liegen —, sich legen auf (loc.: gewöhnlich
aber acc. P. 1, 4, 46. Vop. 5, 2): दश मासं कृपानः कुमारे अग्रि मातरि
RV. 5, 78, 9. स्तब्धे ÂCV. ÇR. 3, 14, 20. अक्रान्द्रतल्पे Bûg. P. 3, 8, 10.
पञ्चतुरध्यशेत auf weichem Auge er lag ÇAT. Br. 7, 1, 2, 1. 7. या कृता
अग्रिशरते 14, 6, 1, 10. — पृथिवीमधिशिष्यिरे MBu. 6, 3961. 7, 6509. R.
GORR. 2, 8, 59. अग्र्यशयिष्ठ गाम् BHATT. 13, 114. रत्नाकरम् Vishnu RAGH.
13, 6. शय्याम् R. 2, 88, 12. BHATT. 18, 79. आस्माकीं सिद्धात्तशय्यामधिशय्य
SÂH. D. 31, 10. शिलाविशेषान् RAGH. 16, 49. ÇAK. 33, 2. 3. विताम् Spr.
4863. अक्रिम् (श्रीशः) Vop. 5, 2. भुजात्तरम् RAGH. 19, 32. रथम् 5, 28. शेष-
मधिशयितो विष्णुः Vop. 26, 129. वाहनानि so v. a. besteigen BHATT. 14,
74. पावकेनाधिशयता MBu. 13, 4061. bewohnen, beziehen (eine Woh-
nung): लङ्कावनम् BHATT. 10, 35. सिंक्ष्य पर्वतकुक्षमधिशयानस्य HIT.
58, 2. ग्रामम् P. 1, 4, 46, Schol. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 503,
Çl. 19. — Statt न रात्रावप्यधिशये PÂÑKÂT. 26, 24. fg. liest die ed. Bomb.
richtiger न रात्रिमपि शेते. — caus. legen auf, mit zwei acc.: अग्रिशय्य
DAÇAK. 122, 6. einlegen an Stelle eines Andern (instr.): अथाप्यकृतेन
विश्रान्तिना मानसमध्यशाययिष्यत् Nid. 9, 6. 7. 5, 10. 10, 7.

— समधि caus. einlegen an Stelle eines Andern Nid. 5, 10.

— अग्रु 1) herumliegen an, in Etwas: ये सूर्तिका अग्रुशरते AV. 8, 6, 19.
शये श्यासु प्रयुतो वनान् RV. 3, 53, 4. liegen auf ÇVETÂÇV. Up. 4, 5. शयनानि
MBu. 7, 1391. महीम् 1995. ruhen in: मयि Bûg. P. 3, 9, 43. — 2) sich
nach Jmd (acc.) hinlegen: शयानं चानुशेते हि तिष्ठत्तं चानुतिष्ठति । अग्रु-
धावति धावत्तं कर्म पूर्वकृतं नरम् ॥ Spr. 3063. DAÇAK. 67, 3. Bûg. P. 3,
7, 37. 4, 23, 59. — Vgl. अग्रुशय figg. und °शायिन्.

— अग्रि liegen auf (acc.) ÇAT. Br. 1, 2, 5, 4. 3, 1, 1, 1.

— अग्र 1) liegen in, auf (acc. oder loc.): तमः RV. 1, 32, 10. 10, 124, 1.
रजसो बुधम् 1, 52, 6. अग्रः 5, 30, 6. 8, 6, 16. योनिम् 10, 162, 1. 2, 11, 9. AV.
5, 23, 9. तत्परम् 17, 12. कुसुमान्याशरते षट्पाः VIKR. 41. सिरासु RV. 1, 121,
11. 4, 30, 11. 8, 41, 7. डुर्दमैन्मा शये so v. a. fällt zur Last AV. 12, 4,
19. — 2) wünschen act.: सुगुहस्याशयन्पुंस्त्वम् Bûg. P. 9, 1, 37. —
Vgl. आशय. — caus. legen auf (loc.): तस्यां चितायां नृपतेः शरीरम् —
आशीशयत् (अ°?) R. GORR. 2, 83, 31.

— अन्वा sich erstrecken über: किर्यङ्गविष्यदन्वा शये ऽस्य AV. 10, 7, 9.

— प्रत्या vor Etwas liegen: सप्त प्रति प्रवत्तं आशयानम् RV. 4, 19, 3. 17, 7.

— उद्ग hervorstehen über: ये एते अग्रितः पुच्छकाण्डे शिखण्डास्ये उ-

च्छयाते ÇAT. Br. 4, 5, 2, 5.

— उप 1) liegen bei (acc.), daneben liegen: गतासुमेतमुप शेषे RV. 10, 18,
8. ÇAT. Br. 4, 1, 5, 9. स्त्री पुमांसम् 1, 1, 1, 20. 2, 5, 2, 17. 6, 3, 1, 30. TS. 5,
3, 2, 2. KÂTH. 21, 2. KAUC. 46. ऋतुकाले — पत्नीमुपशयेत्सदा MBu. 13,
6603. R. 6, 8, 17. अग्नीम् MBu. 13, 353. KAUC. 73. वासः 68. येयं वयसः
पततो निर्णामादेका नाद्युपशेते ÇAT. Br. 10, 2, 1, 6. liegen auf: धरण्याम्
R. 6, 19, 70. — 2) wohl bekommen: इदं ममोपशेत इदं च नोपशेत इति das
ist mir zuträglich, — gesund KARAKA 3, 1. सात्स्यं नाम तद्यत्सात्स्येना-
पसेव्यमानमुपशरते (°शेते) 8. — Vgl. उपशय, उपशाय fig.

— नि vgl. निशायिन्, निशिता, निशीथ, निशीध्या.

— निम् s. निःशयान.

— परि herumliegen um, umgeben, umfassen: वैल्लस्थानं परि तूळ्हा
अशेरन् RV. 1, 133, 1. अग्रिं परिशयानमर्षः 3, 32, 11. अश्राभिधानो मुखं
परिशेते ÇAT. Br. 6, 3, 1, 27. TS. 6, 2, 8, 6. sich befinden an oder in:
त्रिनां अश्रिना परि त्रिधातुं पृथिवीमशायतम् RV. 1, 34, 7. 6, 62, 3. विशं
विशं मध्वा पर्यशायत 10, 43, 6. (आपः) याः पूताः परिशेरते TS. 3, 7, 4, 17.
व्यामेकः परिशय आत्मैवात्मानं परि शये 6, 3, 2, 5. सोमपीथम् 3, 6, 5. आ
तृतीयसवनात्परि शेरते bleiben liegen 4, 2, 6.

— प्र sich legen auf: प्र सप्तवधिराशसा धाराममेरेशायत RV. 8, 62, 9.

— प्रति gegen Jmd (acc.) liegen (vgl. Jmd anliegen) so v. a. nicht von
seiner Seite weichen um ihn zur Nachgiebigkeit zu zwingen (vgl. 1. विष्
mit प्रत्युप): अहं त्विमं जलनिधिं समारप्स्याम्युपायतः । प्रतिशेष्याम्युपव-
सन् (प्रतिशेष्याप्युप° ed. Bomb.) दर्शयिष्यति मा ततः ॥ MBu. 3, 16298.
प्रतिशिये जलनिधिं विधिवत्कुशसंस्तरे 16300. — Vgl. प्रतिशोवन्.

— वि ausgestreckt liegen: पथि व्यशेत Bûg. P. 10, 12, 16. sitzen blei-
ben auf: (पत्निः) अशक्रुवत्तः पतितुं शिखरेषु व्यशेरत R. 5, 93, 28. —
Vgl. विशय, °शाय, °शायिन्.

— सम् unschlüssig sein, Anstand nehmen, im Zweifel sein: संशयामहे
MBu. 12, 3713. मा संशयिष्ठाः Bûg. P. 6, 11, 19. संशयिरे 10, 66, 25. संशय
Spr. (II) 1730. संशयानः स्वजीविते verzweifeln an KATHÂS. 26, 143. act. mit
acc. sich über Etwas nicht einigen können, verschiedener Meinung über
Etwas sein: संशयति सान्निषः श्रेष्ठाः शुद्धशुद्धी नृपे तदा MIT. 143, 9. 10.
संशयित mit act. Bed. unschlüssig, im Zweifel über Etwas seiend R. 2, 88,
16 (96, 19 GORR.). 5, 44, 14. RAGH. 14, 55. mit pass. Bed. dem Zweifel
unterworfen, zweifelhaft, ungewiss, in Frage stehend, gefährdet MBu.
1, 1779. 6174. 3, 248. 4, 831. 5, 7081. 7, 411. 14, 1349. R. 3, 41, 31. 5, 1,
81. 6, 31, 12. KÂM. NITIS. 8, 80. Spr. 3166. n. Ungewissheit, Zweifel:
केचित्संशयिते (संशयिताः?) स्थिताः MBu. 14, 1358. — Vgl. संशय.

3. शी (= 2. शी) adj. am Ende eines comp.; s. निष्, पत्सुतः (unter
पत्सुतम्), मध्यम°, स्थान°. f. = शयन und शास्ति ÇABDAR. im ÇKDR.

4. शी s. 1. und 2. शा.

5. शी s. श्या.

शीक, शीकते DhÂTUP. 4, 1 (सेचने). 11, v. 1. (गत्यर्थ). tröpfeln, stieben:
शिशिके शोषितं व्योम BHATT. 14, 76. चौरशीकिष्ठ शोषितम् 13, 26. शी-
कयति DhÂTUP. 33, 116 (भाषार्थ oder भासाय). 34, 20 (ग्रामर्षणे, मर्षणे,
ग्रामर्षे). betröpfeln: (वायवः) चन्द्रावतीतरंगार्द्राः शीकयति च यदपुः HA-
LÂ. im ÇKDR. शीकाय् mit Dehnung TS. PRÂT. 3, 2. tröpfeln, stieben (vom
feinen, seltenen Regen): शीकायैत् VS. 22, 26. शीकायिष्यन् und शी-